

Vol - 08/ January 2017

ISSN 2321 5054

History Times

UGC Approved & Peer Reviewed Research Journal of History & Archaeology

Editors

Prof. Naveen Gideon

Prof. B. K. Shrivastava



Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan, Sagar (M.P.)

Regd. No. 06/09/01/09369/12

CONTENTS

1. मौर्यकालीन प्रशासन - प्राचीन भारत में सुशासन का प्रथम उदाहरण अभिषेक अग्रवाल	1
2. लखबरिया की प्रागैतिहासिक गुफाएँ अशोक सिंह कुशराम	8
3. श्री हरिकृष्ण : एक सरफरोश राष्ट्रवादी डॉ. नवीन गिडियन	13
4. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व डॉ. मीना श्रीवास्तव	17
5. राष्ट्रीय कैडेट कोर के प्रारम्भिक स्वरूप का ऐतिहासिक अध्ययन डॉ. मुकेश कुमार	21
6. ग्वालियर के सिंधिया कालीन भित्ति चित्रांकनों में दर्शित शैलीगत प्रभाव डॉ. कुमकुम माथुर	25
7. कण्वाश्रम स्थल की खोज और पहचान के विविध साक्ष्य डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ	30
8. 1842 के बुन्देला विद्रोह के दौरान चन्द्रपुर में जवाहर सिंह का विद्रोह एवं आत्मसमर्पण डॉ. बी. के. श्रीवास्तव	35
9. बुन्देली लोक पर्व, उत्सव एवं व्रत डॉ. गीता राजपूत	39
10. ब्रिटिशकालीन मध्यप्रान्त में रेलवे का विकास : एक ऐतिहासिक विश्लेषण अखिल कुमार गुप्ता	46
11. रोमेश चन्द्र दत्त : एक मूल्यांकन सृष्टि वर्मा	51
12. भोपाल रियासत में साम्प्रदायिक सद्भाव रचना मेहरा	56
13. तुकोजीराव होल्कर द्वितीय एवं इंदौर में 1857 का विद्रोह डॉ. विभा राठौड	62
13. प्राचीन भारत में अस्पृश्यता का उद्भव : एक अध्ययन डॉ. पंकज सिंह	69
15. Economic Status of Women of Banjara Community in M.P. Rajput	76

Prof. Naveen Gideon

Editor, "History Times"

Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan, Sagar (M.P.)

Cell - 9425425477, 9425020650, E-Mail : historytimes2010@gmail.com

Royal Computers, Sagar 244289, 9425452106

प्राचीन भारत में अस्पृश्यता का उद्भव : एक अध्ययन

डॉ. पंकज सिंह

सहायक प्राध्यापक - इतिहास विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्रस्तुत शोध पत्र "प्राचीन भारत में अस्पृश्यता का उद्भव : एक ऐतिहासिक अध्ययन" में प्राचीन काल में अस्पृश्यता की उत्पत्ति के विभिन्न कारणों को जानने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः प्राथमिक स्त्रोतों पर आधारित है साथ ही साथ द्वितीयक स्त्रोतों की सहायता ली गई है। अस्पृश्यता भारतीय समाज में एक असाध्य रोग की भांति है, जिसने भारतीय समाज को कई टुकड़ों में विभाजित कर दिया है। विशेषकर ऊँची और नीची जातियों में काफी भेदभाव और वैमनस्य उत्पन्न होने से सामाजिक एकता छिन्न-भिन्न हुई। अस्पृश्यता के कारण ही सामाजिक और आर्थिक विकास के प्रायः सभी सुअवसर और साधन ऊँची जातियों के हाथों में थे। फलस्वरूप आगे भी समाज का अधिक भाग गरीब, अशिक्षित और प्रत्येक दृष्टि से पीछे रह गया। अतएव पूरे देश के पिछड़ेपन का प्रमुख कारणों में से एक अस्पृश्यता भी है। अतः इस दृष्टि से यह अध्ययन महत्वपूर्ण है जिसमें यह जानने का प्रयास किया गया है कि अस्पृश्यता के उद्गम के प्रमुख स्त्रोत कौन से रहे हैं। भारतीय समाज में अस्पृश्यता, जाति प्रथा का एक घुणित पहलू है। हमारे देश में जाति प्रथा का उद्भव लगभग तीन हजार वर्ष पहले हुआ था। जाति व्यवस्था का सबसे कुरूप स्वरूप यह रहा कि उसने कुछ सबको को अस्पृश्य और जातिविहीन घोषित कर दिया। फिर इसके बहाने उन्हें जमीन के स्वामित्व, मंदिर में प्रवेश, गांव के कुआँ, तालाब जैसे पानी के स्त्रोतों से वंचित रहना पड़ा। अस्पृश्यों के साथ अन्य सभी जातियों को, यहाँ तक कि उनके सबसे निचले तबकों को भी अछूतों से शारीरिक स्पर्श करने की मनाही थी। वे उनके हाथों का पानी या भोजन तक स्वीकार नहीं कर सकते थे।

भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता वर्ण-व्यवस्था भी है। इस व्यवस्था के विभिन्न रूप भारतीय इतिहास में देखने को मिलते हैं। वर्ण शब्द की व्युत्पत्ति 'वृ' धातु से हुई है। इसका अर्थ वरण करने अथवा चुनने से है।¹ संस्कृत साहित्य में 'वर्ण' शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया गया है। अनेक स्थलों में रंग के सन्दर्भ में इसका प्रयोग हुआ है² यथा कृष्ण वर्ण, रक्त वर्ण आदि। कभी वर्णन करने के अर्थ में भी इसका प्रयोग मिलता है। वर्णमाला के हेतु भी इसका उल्लेख किया गया है। चातुर्वर्ण्य के सन्दर्भ में प्रायः इसका उल्लेख हुआ है। इन अर्थों में कहीं यह संज्ञा के रूप में प्रयोग किया गया है और कहीं क्रिया के रूप में। वर्ण का प्रयोग हम जिस अर्थ में कर रहे हैं वह 'चातुर्वर्ण्य' है, जो समाज के समुचित संचालन की एक व्यवस्था है। ऋग्वेद में वर्ण शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर मिलता है। यहाँ पुरोहित, राजन्य, विश तथा शूद्र शब्दों का उल्लेख बार-बार किया गया है। इसके दसवें मण्डल की एक ऋचा में वर्णों की उत्पत्ति का उल्लेख स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है। उसमें एक विराट् पुरुष की कल्पना की